जुलाई 2022 वर्ष 2, अंक 6
दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी) दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार

"सभी पदार्थ केवल एक बल (Force) के आधार पर उत्पन्न होते हैं और मौजूद रहते हैं जो परमाणु के कण को कंपन (vibration) में लाता है और परमाणु के इस सबसे सूक्ष्म सौर मंडल को एक साथ जोड़ कर रखता है। हमें इस शक्ति के पीछे एक चेतन और बुद्धिमान मन के अस्तित्व को मान लेना चाहिए। यह मन सभी पदार्थों का साँचा (matrix) है।"

– मैक्स प्लैंक

विषय सूचि

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 2
औद्योगिक क्रांतियाँ 3
डी.ई.आई. से समाचार 5
सूचना केन्द्रों से समाचार 6
डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार समिति 8

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

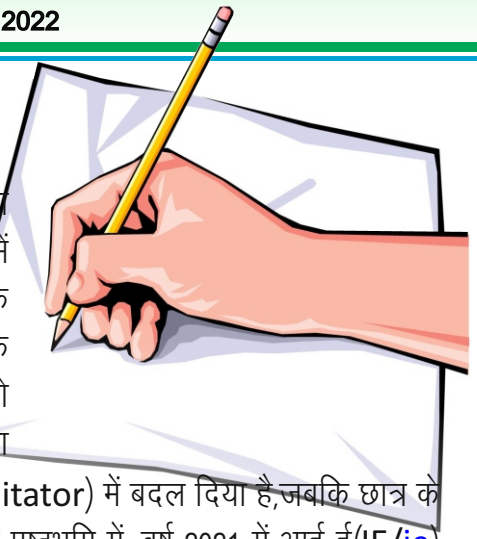

न्यूज़लैटर के पिछले कुछ संस्करणों में, हमने दुनिया और भारत दोनों में उच्च शिक्षा के बदलते परिदृश्य के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया है, जो हमें यह कल्पना करने में मदद करते हैं कि भविष्य के विश्वविद्यालय कैसे होंगे। यह कहा जाना आवश्यक है कि कुछ मुद्दों पर आम सहमति का अभाव है। उदाहरण के लिए, यह दावा किया गया है कि शिक्षा 4.0 (शिक्षा का सबसे उन्नत और नवीनतम संस्करण) ने शिक्षक की भूमिका को एक ज्ञान प्रदाता (छात्र के एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होने के साथ) से सामग्री निर्माता (content creator) या अधिकतम पथप्रदर्शक (mentor) या सुविधाकर्ता (facilitator) में बदल दिया है,जबकि छात्र के पास अपने स्वयं के सीखने के पथ के निर्माता बनने के लिए पूर्ण लचीलापन है। इस पृष्ठभूमि में, वर्ष 2021 में आई ई(IE/ie) यूनिवर्सिटी, मैड्रिड (स्पेन) के अध्यक्ष द्वारा 'उच्च शिक्षा के पुनर्निवेश' पर व्यक्त विचार [1] उल्लेखनीय हैं। उनके अनुसार''..... अधिक लचीली और अनुकूलनीय सीखने की दुनिया में प्रवेश पाने के लिए मुख्य इंजन, स्वाभाविक रूप से, संकाय और शिक्षक होना चाहिए.....किसी भी शैक्षिक प्रारूप में सफलता की कुंजी न तो तकनीक है, न ही सामग्री। ये ऑनलाइन सीखने के आवश्यक घटक हैं, लेकिन ये जल्दी ही वस्तु (commodity) बन जाते हैं। यह फैकल्टी, इंस्ट्रक्टर और कोचेस (coaches) द्वारा निर्मित (ऑर्केस्ट्रेटेड) अनुभव है, चाहे वह उपस्थित अवस्था (presential) से हो या रिमोट, इनसे फर्क पड़ता है''। इसके बाद लेखक कहते हैं– महामारी के बाद की दुनिया अनुकूलन और परिवर्तन को बढ़ाती है। पेशेवर (professionals) मिश्रित जीवन जीएंगे और काम का माहौल तेजी से मिश्रित और तरल/''द्रव'' (गैसों सहित) हो जाएगा। ट्रिनिटी ऑफ पास्ट–प्रेजेंट–फ्यूचर सहित हाइब्रिड प्रारूप जो Trinity-Within Trinity-Within Trinity..... Ad Infinitum की वकालत करते हैं.....और वितरण के विभिन्न ऑनलाइन रूप यहां रहने के लिए हैं क्योंकि वे केवल पारंपरिक प्रस्तुतिकरण सीखने की तुलना में बेहतर परिणाम प्रदान करते हैं।

IE विश्वविद्यालय से उत्पन्न एक अन्य प्रकाशन में, यह कहा गया है [2] कि भविष्य तरल/''द्रव''**शिक्षा में निहित है, जिसमें पारंपरिक तरीके, जिन्हें 'ठोस आधुनिकता' कहा जाता है, के विपरीत अनुकूलन क्षमता, लचीलापन और तरलता के गुण हैं, जिसमें उच्च शिक्षा का आयोजन किया जाता है। IE (Instituto de Empresa) विश्वविद्यालय, मैड्रिड लिक्विड लर्निंग (Liquid Learning) मॉडल पर आधारित है, जिसके बारे में दावा किया जाता है कि यह एक परिवर्तनकारी, व्यापक, समग्र और इंटरैक्टिव (Interactive) शैक्षिक अनुभव है [2], जो भौतिक और डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टम को एक साथ मिलाकर single learning methodology और प्लेटफॉर्मों से आगे निकल जाता है।

(** ''यानी ठोस, तरल और गैसीय उत्सर्जन (कार्बन फुट–प्रिंट/ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए। यूएस ई पी ए, फ्यूचरिस्टिक एआई और रोबोटिक्स, जिसे कोबोटिक्स भी कहा जाता है (कार्नेगी मैलन यूनिवर्सिटी के पेन स्टेट क्वेकर्स के माध्यम से))।

यह स्मरण करने योग्य है कि उच्च शिक्षा के लिए एक और मॉडल–पारिस्थितिक (Ecological) विश्वविद्यालय – को न्यूज़लैटर के पिछले संस्करणों में वर्णित किया गया है कि वे अपने आसपास के समुदायों के लिए गहराई से प्रतिबद्ध हैं और उच्च शिक्षा के लिए एक आशाजनक मॉडल के रूप में, एक बेहतर दुनिया लाने के लिए छात्रों की जरूरतों के लिए असाधारण रूप से प्रतिबद्ध हैं।

शिक्षा का डी.ई.आई. मॉडल, न केवल सहकारी शिक्षा (Coop.education)प्रदान करता है बल्कि सहशिक्षा (Coed.education)को भी बढ़ावा देता है (मनुष्यों और यहां तक कि अन्य जीवित प्राणियों के लिए लिंग–मुक्त शिक्षा):– इस प्रकार अस्तित्व में लाना: मानव जाति/मनुष्यों के बीच लोकप्रिय वाक्यांश ''स्वस्थ, धनवान और बुद्धिमान'' को साकार करके और पाँचवी औद्योगिक क्रांति की शुरूआत करते हुए, (ग्रह पृथ्वी की अनुमानित 11 बिलियन मानव आबादी को स्वस्थ ''लैक्टो–शाकाहारी'' आहार खिलाने की क्षमता भी प्रदान करता है)। (जिसे न्यूरोसाइंटिस्ट डॉ. वी. नटराजन ने प्रसिद्ध रूप से

वर्णित किया है, ''दयालबाग़ और डी.ई.आई. फ्यूचरिस्टिक फ्रेमवर्क मॉडल फॉर ट्रांसफॉर्मेशन फॉर होमो–सेपियन्स टू होमो–स्प्रिटुअलिस''सोसाइटी): ''सहेज'' का पावर लॉ (यानी आसान) अल्ट्रा–ट्रान्सेंडैंटल मेडिटेशन प्रैक्टिस, विशेष रूप से दयालबाग़ (धार्मिक समाज) और डी.ई.आई. (चौरिटेबल एजुकेशनल पार्टनर) द्वारा प्रायोजित, पिछले 41 वर्षों से, 1981 से केंद्र सरकार के माध्यम से (भारत अध्यादेश दिनांक 16.05.1981)।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

सन्दर्भ:

[1] Retrieved from: https://www.linkedin.com/pulse/higher-education-2022-challenges-trends-santiago-iniguez/

[2] Retrieved from: https://docs.ie.edu/center-for-corporate-learning-innovation/publications/Liquid-Learning-on-Times-of-Liquid-Modernity.pdf

नोट: नीले रंग में हाइलाइट की गई मुद्रित सामग्री परम पूज्य प्रो. पी.एस. सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहाकार समिति द्वारा है।

औद्योगिक क्रांतियाँ

न्यूज़लैटर के पिछले कुछ संस्करणों में, हमने उच्च शिक्षा के बदलते परिदृश्य में शिक्षा के क्रमिक विकास को शिक्षा 1.0 से शिक्षा 4.0 और विश्वविद्यालयों को विश्वविद्यालय 1.0 से विश्वविद्यालय 4.0 के रूप में 'प्रस्तुत' किया था। अब शिक्षा पर उद्योग के व्यापक प्रभाव को देखते हुए इस संस्करण में हम औद्योगिक क्रांतियों पर विचार करेंगे, जिनसे मानव जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव आया है या होने की उम्मीद है।

पहली औद्योगिक क्रांति [1]

(उद्योग 1.0)

पहली औद्योगिक क्रांति को हस्त उत्पादन विधियों को भाप शक्ति और जल शक्ति के उपयोग के माध्यम से चलने वाली मशीनों द्वारा परिवर्तित उत्पादन विधियों से चिह्नित किया गया था। नई प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन में एक लंबा समय लगा, इसलिए यह जिस अवधि को संदर्भित करता है वह 1760 और 1820, या यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में 1840 के बीच थी। इसके प्रभावों का कपड़ा निर्माण पर परिणाम हुआ, जिसने सबसे पहले इस तरह के परिवर्तनों को अपनाया / साथ–साथ लौह उद्योग, कृषि और खनन पर भी इसका असर पड़ा, हालांकि इसका सामाजिक प्रभाव भी एक मजबूत मध्यम वर्ग के साथ था। उस समय ब्रिटिश उद्योग पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

दूसरी औद्योगिक क्रांति [1]

(उद्योग 2.0)

दूसरी औद्योगिक क्रांति, जिसे तकनीकी क्रांति के रूप में भी जाना जाता है, 1871 और 1914 के बीच की अवधि है, जो व्यापक रेलमार्ग और टेलीग्राफ नेटवर्क की स्थापना के परिणामस्वरूप हुई, जिसने लोगों और विचारों के साथ–साथ बिजली के तेजी से हस्तांतरण की अनुमति दी। कारखानों को आधुनिक उत्पादन लाइन विकसित करने के लिए विद्युतीकरण बढ़ाने की अनुमति दी गई। यह उत्पादकता में वृद्धि के साथ महान आर्थिक विकास की अवधि थी, जिसके कारण बेरोजगारी में भी वृद्धि हुई क्योंकि कई कारखाने के श्रमिकों को मशीनों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।

तीसरी औद्योगिक क्रांति [1]

(उद्योग 3.0)

तीसरी औद्योगिक क्रांति, जिसे डिजिटल क्रांति के रूप में भी जाना जाता है, 20 वीं शताब्दी के अंत में दो

विश्व युद्धों की समाप्ति के बाद हुई, जो पिछली अवधि की तुलना में औद्योगीकरण और तकनीकी प्रगति की मंदी के परिणामस्वरूप हुई थी। Z1 कंप्यूटर का उत्पादन, जो एक दशक बाद बाइनरी फ्लोटिंग–पॉइंट नंबर और बूलियन लॉजिक का उपयोग करता था, अधिक उन्नत डिजिटल विकास की शुरुआत थी। संचार प्रौद्योगिकियों में अगला महत्वपूर्ण विकास सुपरकंप्यूटर था, जिसमें उत्पादन प्रक्रिया में कंप्यूटर और संचार प्रौद्योगिकियों के व्यापक उपयोग के साथ मशीनरी ने मानव शक्ति की आवश्यकता को निरस्त करना शुरू कर दिया।

चौथी औद्योगिक क्रांति [2]

(उद्योग 4.0)

उद्योग 4.0 प्रतिमान मुख्य रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, सेवाओं (services)के इंटरनेट और उद्योग में 3 डी प्रिंटिंग जैसी उन्नत तकनीकों के एकीकरण पर आधारित है, ताकि विनिर्माण प्रक्रियाओं को स्वचालित और डिजिटल बनाया जा सके।

विभिन्न औद्योगिक क्रांतियों ने मानव जीवन की सभी गतिविधियों में, विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में, हमेशा बड़ी उथल–पुथल मचाई है। उद्योग 4.0 के साथ, शैक्षिक संगठनों के लिए एक नई क्रांति की ओर बढ़ना अनिवार्य हो गया है: और यह है शिक्षा 4.0।

इस स्तर पर यह अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है कि राधास्वामी आस्था (दयालबाग़) के शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष और आध्यात्मिक लीडर परम पूज्य प्रोफेसर प्रेम सरन सत्संगी साहब ने पांचवीं औद्योगिक क्रांति – उद्योग 5.0 की शुरुआत की घोषणा की है [3], जो उनके अपने शब्दों में प्रस्तुत की जा रही है:

लैक्टो – शाकाहार: अनुमानित स्थिर (stablized) *लगभग 1 बिलियन आबादी द्वारा सौर मंडल आधारित मिल्कीवे गैलेक्सी में ग्रह पृथ्वी पर 11 बिलियन लोगों को आवश्यक स्वस्थ आहार खिलाने की क्षमता रखता है और विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक क्षेत्र में अविनाशी अस्तित्व का वादा (आर्टिकुलेटिव रा–धा–स्व–आ–मी आस्था) एकता के साथ द्वैत–पर–इच्छा के माध्यम से: इस प्रकार – पांचवीं औद्योगिक क्रांति की शुरुआत (डिजिटाइजेशन / विवेक के निरंतर प्रयास के माध्यम से), जबकि द वर्ल्ड एट लार्ज, में अभी भी कोपिंग–स्ट्रेटेजी* (strategy) *के बारे में बात हो रही है – निकटतम ऑर्बिटिंग मार्सियन गैलेक्सी के साथ अपरिहार्य विलय के लिए रणनीति (यहां तक कि आधुनिक वैज्ञानिक समुदाय द्वारा भविष्यवाणी किए गए विघटन और महान विघटन के लिए प्वाइंट निमो पर अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन मलबे को डंप करने की तैयारी; के लाभ के बिना) आधुनिक न्यूरो – विज्ञान द्वारा विधिवत पहचान के रूप में राधास्वामी आस्था (प्रत्येक जीवित मानव मस्तिष्क के सूक्ष्म जगत में निहित) के अल्ट्रा – ट्रान्सेंडैंटल मेडिटेशनल प्रैक्टिस के माध्यम से एस्केलेटिव / एस्केलेटरी "फेल–सेफ" विकल्प; विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक डोमेन में संक्रमण के लिए। प्रकृति से परे (मैक्रोकॉस्म); भौतिक और सूक्ष्म डोमेन में स्वतंत्रता की अनंत डिग्री के साथ संपन्न; माया और काल द्वारा अलग–अलग, साथ ही संयुक्त रूप से, मिलीभगत से, जैसा कि यह था।*

24 / 27 मई, 2022 को आयोजित डी.ई.आई. की एकेडेमिक काउंसिल की ऑनलाइन बैठक ने संकल्प लिया कि लैक्टो–शाकाहारी कृषि–पारिस्थितिकी और सटीक–कृषि (Precision-farming) दृष्टिकोण के माध्यम से दुनिया भर में 11 अरब लोगों को खिलाने के लिए दयालबाग़ जीवन शैली को अपनाने पर शोध किया जाएगा। सन्दर्भ [4] को भी इसी सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

प्रो. वी. बी. गुप्ता,
समन्वयक, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम द्वारा संकलित

सन्दर्भ:

[1] Wikipedia – The Fourth Industrial Revolution – 12.09.2021

[2] Mamadou L Gueye, Ernesto Expósito. University 4.0: The Industry 4.0 paradigm applied to Education. IX Congreso Nacional de Tecnologías en la Educación, Oct 2020, Puebla (Mexico), France. hal-02957371 (https://hal-univ-pau.archives-ouvertes.fr/hal-02957371/Document)

[3] e-book titled "Consciousness Studies in Sciences and Humanities: Eastern and Western Perspectives" contracted on 10th May, 2022 for publication by Springer Nature, Switzerland

[4] e-book titled "Macroeconometric Methods: Applications to the Indian Economy", contracted to be published by Springer Nature, Singapore, as communicated on 30.07.2022 by e-mail by Prof. (Dr.) Pami Dua, Director Delhi School of Economics.

डी.ई.आई. से समाचार

श्री रजित आर. ओखंडियार, सीईओ और सदस्य सचिव, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बैंगलोर, कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार, जो मध्य प्रदेश वन सेवा से पांच साल की प्रतिनियुक्ति पर हैं (उन्होंने कहा कि जब वह कुछ महीनों के बाद अपना कार्यकाल पूरा कर लेंगे तो वे एमपी सेवा में वापस जाएंगे), एमओयू हस्ताक्षर समारोह में भाग लेने के लिए डी.ई.आई. आए। पहले उन्होंने केंद्रीय कार्यालय परिसर में उस सेट–अप का दौरा किया जहां कौशल प्रशिक्षण दिया जाता है। डी.ई.आई. की कोषाध्यक्ष ने डॉ. पारुल भटनागर, एमेरिटस फैकल्टी, ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग, आर्ट्स फैकल्टी के साथ उन्हें सेट–अप दिखाया।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हॉल में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह का आयोजन किया गया था।

संस्थान की प्रार्थना के बाद प्रो. वी.बी. गुप्ता ने बैठक में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों तथा समीपवर्ती संगोष्ठी हॉल में उपस्थित प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षार्थियों का, जो पर्यवेक्षित वीडियो कांफ्रेंसिंग मोड के माध्यम से जुड़े हुए थे,स्वागत किया।

उन्होंने दर्शकों को बताया कि टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग और ड्रेस डिज़ाइनिंग और टेलरिंग दो प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रम हैं जिन्हें डी.ई.आई. में डिज़ाइन किया गया था और कुछ वर्षों तक मुख्य परिसर में आयोजित किए जाने के बाद, क्रमशः 2006 और 2008 में डिस्टेंस मोड में पेश किए गए थे। पूरे देश में कई अध्ययन केंद्रों में इन कार्यक्रमों के लिए वर्ष–दर–वर्ष बहुत बड़ी संख्या में महिला छात्रों ने पंजीकरण कराया।

प्रो. गुप्ता ने तब बताया कि कैसे राजाबोरारी एस्टेट में स्थानीय आदिवासी आबादी को परिधान डिज़ाइन और सिलाई में उद्यमी बनने के लिए प्रशिक्षित और संगठित किया गया है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि विशाखापत्तनम, पनवेल, फरीदाबाद, भोपाल, कोलकाता,मिर्ज़ापुर और आगरा जैसे देश के अन्य केंद्रों में भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं के तहत बड़ी संख्या में प्रशिक्षुओं को ब्लॉक प्रिंटिंग, टाई एंड डाई और स्क्रीन प्रिंटिंग प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

फिर उन्होंने वर्तमान एमओयू की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जिसे तीन पहलुओं (सभी रेशम से

संबंधित) पर प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है: रेशमी कपड़ों की ब्लॉक प्रिंटिंग, कंप्यूटर सहायता प्राप्त वस्त्र डिज़ाइन और परिधान डिज़ाइन और सिलाई। कपड़ा मंत्रालय छात्रों को उद्योग में नौकरी दिलाने में मदद करेगा। उन्होंने उल्लेख किया कि यह क्षमता–निर्माण (capacity-building) अभ्यास डी.ई.आई. के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप है, अर्थात आदिवासी और कम आय वाले लोगों को मुख्यधारा में लाना।

मुख्य अतिथि केंद्रीय रेशम बोर्ड के सीईओ श्री आर आर ओखंडियार ने याद किया कि स्वर्गीय श्री अनिल ओबेरॉय के साथ उनके जुड़ाव और राजाबोरारी की उनकी यात्रा ने उन्हें आश्वस्त किया था कि दयालबाग़ की कार्य संस्कृति में मौजूद समर्पण लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे अच्छा मार्ग है। सरकार का राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन बहुत महत्वाकांक्षी है और सभी क्षेत्रों में कुछ करोड़ कुशल व्यक्तियों को तैयार किया जाना था। कपड़ा क्षेत्र का लक्ष्य भी बहुत अधिक है और कुशल व्यक्तियों की क्षमता निर्माण के लिए बहुत अधिक धनराशि उपलब्ध है। इसमें डी.ई.आई. अहम भूमिका निभा सकता है। उनका विचार था कि राजाबोरारी में बहुत अधिक ''आबादी'' भूमि, जो जंगल की भूमि से भिन्न है,के साथ, डी.ई.आई. भी बड़े पैमाने पर रेशम उत्पादन (sericulture) में शामिल हो सकता है।

डी.ई.आई. के अध्यक्ष श्री जी.एस. सूद ने शहतूत वृक्षारोपण पर 'दयालबाग के 100 साल –Garden of the Merciful' पुस्तक के पृष्ठ 73 से वह भाग पढ़ा, जो यह कहते हुए समाप्त होता है कि दयालबाग़ में इस क्षेत्र में एक काफी बड़े कार्यक्रम को बंद कर दिया गया था क्योंकि इसमें रेशम के कीड़ों को मारना शामिल था।

उन्होंने यह भी बताया कि ऐसी प्रशिक्षण योजनाओं से प्रशिक्षु उद्यमी (entrepreneur) बनते हैं।

एम ओ यू पर तब रजिस्ट्रार, डी.ई.आई. और श्री दशरथी बहेरा, नई दिल्ली में केंद्रीय रेशम बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय के सहायक सचिव द्वारा हस्ताक्षर किए गए। उद्घाटन दीप जलाकर किया गया। इसके बाद डॉ. पारुल भटनागर ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया और डी.ई.आई. गीत के साथ समारोह का समापन हुआ।

सूचना केन्द्रों से समाचार

डी.ई.आई. सूचना केंद्र रुड़की ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

डी.ई.आई. सूचना केंद्र रुड़की में 8वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2022 को मनाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं, कर्मचारियों एवं अतिथियों ने भाग लिया। कार्यक्रम विश्वविद्यालय की प्रार्थना के साथ शुरू हुआ जो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रोटोकॉल पर आधारित था। अपने स्वागत भाषण में केंद्र प्रभारी प्रो. वी. हुजूर सरन ने संक्षेप में हमारे जीवन में योग के महत्व पर जोर दिया। इसके बाद डी.ई.आई. के पूर्व छात्र और एक प्रमाणित योग अभ्यासी श्री वी. आगम द्वारा आयोजित एक योग और प्राणायाम सत्र का आयोजन किया गया। केंद्र में उगाई गई जैविक हर्बल चाय सभी प्रतिभागियों को परोसी गई। इस घटना को प्रिंट मीडिया में विधिवत कवर किया गया था।

जमशेदपुर सेंटर के छात्रों ने योग कार्यक्रमों में हिस्सा लिया

जमशेदपुर केंद्र के छात्रों ने ए आई सी टी ई के योग कार्यक्रम में 2–17 जून 2022 तक और फिर 21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भाग लिया । वे योग विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में अपने आवासीय स्थानों पर योग में शामिल होकर योग करते थे। AICTE–ATAL अकादमी द्वारा प्रदान किया गया ऑनलाइन लिंक और दैनिक योग मुद्राओं में न्यूनतम दो चित्र साझा करता है। छात्रों ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया और इसकी सराहना की।

सी आर पी एफ के शहीदों के परिवारों और उनके कर्मचारियों की गृहिणियों के लिए ड्रेस डिज़ाइनिंग एण्ड टेलरिंग कार्यक्रम सत्संगी कॉलोनी, लखनऊ में करने के प्रस्ताव को स्वीकृति मिली।

लखनऊ केंद्र (गोमती नगर) की टीम ने सी आर पी एफ ग्रुप क्षेत्रीय मुख्यालय में सी आर पी एफ वाइव्स (wives) वेलफेयर एसोसिएशन से संपर्क किया था, जो सत्संगी कॉलोनी से केवल 2 किलोमीटर दूर स्थित है। एसोसिएशन ने डी.ई.आई. से सी आर पी एफ के शहीदों के परिवारों और उनके कर्मचारियों की गृहिणियों के लिए सत्संगी कॉलोनी में ड्रेस डिज़ाइनिंग एण्ड टेलरिंग कार्यक्रम की पेशकश करने का अनुरोध किया था ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें। इस सामाजिक कार्य के लिए स्वीकृति प्रदान की गई।

वर्तमान सत्र (2022–23) में सी आर पी एफ कॉलोनी के छात्रों के एक बैच के सत्संगी कॉलोनी में विस्तारित क्लास रूम में संस्थान के नियमों का पालन करते हुए ड्रेस डिज़ाइनिंग एण्ड टेलरिंग कार्यक्रम में भाग लेने की उम्मीद है, जिसमें पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं। नियमित ड्रेस डिज़ाइनिंग एण्ड टेलरिंग कार्यक्रम गोमती नगर केंद्र में आयोजित किया जाता रहेगा।

औद्योगिक दौरा ड्रेस डिज़ाइनिंग एण्ड टेलरिंग छात्रों के लिएः गुड़गांव केंद्र

गुड़गांव में एक प्रतिष्ठित परिधान निर्माण कारखाने मेसर्स पर्ल ग्लोबल इंडस्ट्री में डी.ई.आई. गुड़गांव केंद्र के छात्रों के लिए एक औद्योगिक यात्रा की व्यवस्था की गई। यह संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूके और मध्य पूर्व जैसे देशों सहित विश्व स्तर पर माल का निर्यात करता है। छात्रों ने पूरे कारखाने का दौरा किया और कारखाने में निम्नलिखित कार्यों / सुविधाओं को देखाः कच्चा माल भंडारण, मास्टर पैटर्न अनुभाग, कटिंग अनुभाग, उत्पादन– सिलाई अनुभाग, कढ़ाई अनुभाग, निरीक्षण–पैकेजिंग–प्रेषण अनुभाग, गुणवत्ता

नियंत्रण और संकोचन (shrinkage) परीक्षण सुविधा। छात्र तकनीकी रूप से प्रबुद्ध हुए और उन्हें परिधान बनाने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

दयाल नगर, विशाखापत्तनम क्रेंद्र में यामाहा ट्रेनिंग स्कूल, इलेक्ट्रॉनिक्स लैब, टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग और प्रिंटिंग लैब का उद्घाटन समारोह

12 जून, 2022 को डी.ई.आई. सूचना केंद्र, दयाल नगर, विशाखापत्तनम में यामाहा ट्रेनिंग स्कूल, इलेक्ट्रॉनिक्स लैब और टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग एंड प्रिंटिंग लैब की स्थापना का एक संयुक्त उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया जो वर्चुअल मोड में भी उपलब्ध था। आंध्र राधास्वामी सत्संग एसोसिएशन के क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रो. वी.वी.जी. शास्त्री और क्षेत्रीय सचिव, श्री जी रमेश बाबू, कार्यक्रम में उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता श्री. एम. प्रीतम, डिप्टी जनरल मैनेजर, जोनल सर्विस हेड, साउथ जोन, यामाहा मोटर इंडिया सेल्स (पी) लिमिटेड और श्री नवीन भास्कर, अस्सिटेंट महाप्रबंधक, शिक्षा विभाग, दक्षिण क्षेत्र यामाहा मोटर इंडिया सेल्स प्राइवेट लिमिटेड ने की।

निदेशक डी.ई.आई., प्रो. प्रेम कुमार कालरा, प्रो. आनंद मोहन, रजिस्ट्रार, डी.ई.आई. और प्रो. सी. पटवर्धन, डीन, साउथ जोन, डी.ई.आई., ने वर्चुअल मोड के माध्यम से इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान की प्रार्थना से हुई और उसके बाद प्रो. वी.वी.जी.शास्त्री ने भवन का उद्घाटन किया। सर्वशक्तिमान का आशीर्वाद लेने के लिए, डी.ई.आई. स्टाफ सदस्यों द्वारा दो शब्दों का पाठ किया गया।

बैठक की शुरुआत केंद्र प्रभारी श्री वी. दक्षिणामूर्ति द्वारा उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के परिचय के साथ हुई। उन्होंने यामाहा शैड के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दिया। श्री. एम. प्रीतम, उप महाप्रबंधक, को सभा को संबोधित करने और एक वर्ष का प्रशिक्षण पूरा करने पर छात्रों के प्रशिक्षण और प्लेसमेंट की प्रक्रिया समझाने के लिए आमंत्रित किया गया था।

प्रो. आनंद मोहन ने भी सभा को संबोधित किया, उसके बाद प्रो. सी. पटवर्धन ने, डी.ई.आई. में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर के मुख्य अतिथि प्रो. वी.वी.जी. शास्त्री ने दर्शकों को डी.ई.आई. सूचना केंद्र, दयाल नगर, विशाखापत्तनम के इतिहास के बारे में जानकारी दी, और केंद्र के प्रभारी और स्टाफ सदस्यों के साथ–साथ केंद्र से जुड़े अन्य सदस्यों को उनके सहयोग के लिए बधाई दी व आयोजन को सफल बनाने के लिए बधाई दी। समारोह का समापन विश्वविद्यालय गीत ''हे विश्व विद्यालय'' के साथ हुआ।

संरक्षक • प्रो. पी.के कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार • प्रो. एस. के चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक मंडल (अंग्रेजी अंक) • डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री. राकेश मेहता
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

अनुवादक

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन • दयालबाग़ प्रेस